प्राचीन भारतीय ज्ञान

अजय शर्मा

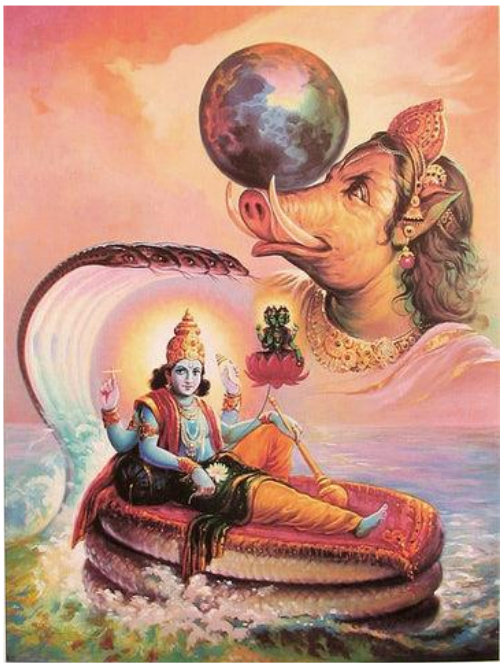

क्या आप बता सकते हैं कि उक्त तस्वीर किसकी है? जी हाँ, यह तस्वीर वराह अवतार भगवान विष्णु के तीसरे अवतार की है। भगवान विष्णु ने वराह अवतार लेकर हिरण्यक्ष का वध किया था और पृथ्वी की रक्षा की थी। वराह अवतार में वराह की नाक के ऊपर आपको क्या दिखाई दे रहा है? जी हाँ, आपने सही पहचाना यह पृथ्वी का चित्र है। क्या आप बता सकते हैं कि पृथ्वी का आकार कैसा दिख रहा है? बिल्कुल सही, गोलाकार दिख रहा है। विचार कीजिए आज से लाखों वर्षों पूर्व जब यह अवतार हुआ तब भी भारतवासियों को यह ज्ञान था कि पृथ्वी गोलाकार है, तभी तो उन्होंने वराह की नासिक के ऊपर गोलाकार पृथ्वी को दर्शाया। अंग्रेजी का शब्द ज्योग्राफी ऐसा विषय है जिसके अंतर्गत पृथ्वी की रचना संबंधित अध्ययन किया जाता है, हिंदी में उसे क्या कहा जाता है? जी हाँ, सही कहा आपने, हिंदी में इस विषय को भूगोल कहा जाता है। भू अर्थात धरती और गोल अर्थात गोलाकार। जब दुनिया ने इस विषय पर अध्ययन आरंभ किया, भारतीयों को तभी से पता था इस धरा का आकार गोल है, इसलिए उक्त विषय का नाम रखा भूगोल। आकर ही नहीं, उन्हें तो धरा की गति का ज्ञान भी था। संसार का एक पर्यायवाची शब्द है जगत, जगत अर्थात जिसमें गति है। हमारे पूर्वजों को यह भी ज्ञान था कि यह संसार गतिमान है। सृष्टि निर्माण का आधुनिक बिग बैंग सिद्धांत भी यही कहता है कि ब्रह्मांड अपनी उत्पत्ति के बाद से ही लगातार विस्तारित हो रहा है।

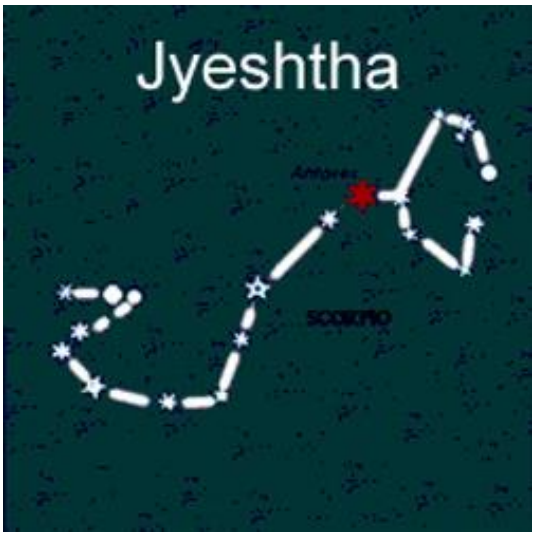

वृश्चिक राशि में स्थित एक तारा है ज्येष्ठा, यह नक्षत्र भगवान शिव से जुड़ा है। इसका संबंध शक्ति और

ऊर्जा से है। जयेष्ठ अर्थात बड़ा। जरा विचार कीजिए इस तारे को यह नाम क्यों दिया गया? पृथ्वी सतह से देखने पर तो सूर्य ही सबसे बड़ा दिखाई पड़ता है, बाकी अन्य सारे नक्षत्र तो बिंदु आकर के दिखाई देते हैं। जाहिर है, प्राचीन भारतीयों को यह ज्ञान था कि अंतरिक्ष का यह तारा आकार में सूर्य से भी बड़ा है। आज वैज्ञानिक उपकरण दूरबीन का उपयोग कर ज्ञात हुआ कि ज्येष्ठा नक्षत्र का आकार सूर्य से लगभग ३.५ गुना और इसका द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान से ५ गुना ज्यादा है।

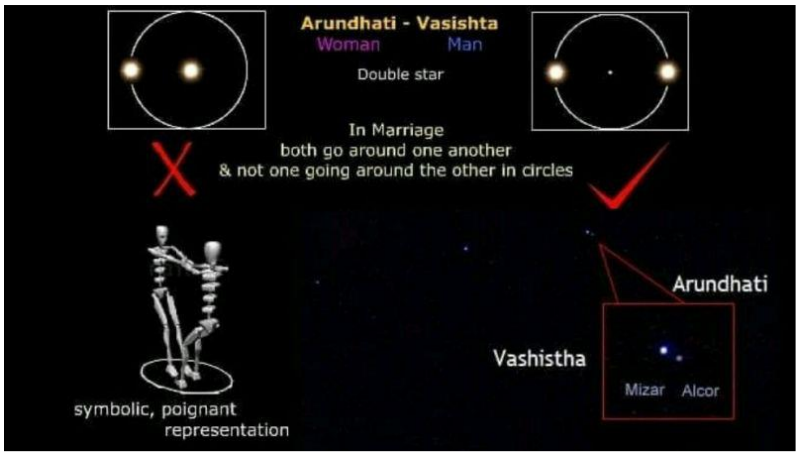

हिंदुओं में एक प्रथा है कि विवाह के उपरांत नव दंपति को तारे दिखाई जाते हैं। यह प्रथा शताब्दियों से चली आ रही है। क्या आप इस रिवाज़ के पीछे का कारण बता सकते हैं? विवाह के उपरांत पति-पत्नी पर उस परिवार की जिम्मेदारी बराबरी की होती है। उस परिवार के अच्छे बुरे समय में पति-पत्नी को समान रूप से कर्तव्यों का निर्वहन करना होता है, ना कोई छोटा और ना कोई बड़ा, दोनों बराबर।

आज नक्षत्र वैज्ञानिकों ने शक्तिशाली दूरबीन से आकाश का निरीक्षण कर यह जाना कि आकाशगंगा में अधिकांशतः ऐसा है कि किसी एक बड़े तारे के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में दूसरा छोटा तारा उसकी परिक्रमा करता है। एक तारा युग्म, अरुंधति वशिष्ठ जो स्वाति नक्षत्र में स्थित मेष राशि में आता है, ऐसा है जो लगभग बराबर गुरुत्व वाले दो तारे हैं।. उनमें कोई एक तारा दूसरे की परिक्रमा नहीं कर रहा है, बल्कि दोनों तारे एक दूसरे के आकर्षण की वजह से समान दूरी पर रहते हुए वृत्तीय पथ पर गमन कर रहे हैं। विशेष उल्लेखनीय है कि यह तारा युग्म सूर्य से ११.७८ प्रकाश वर्ष दूर है। वास्तव में नव दंपति को इन्हीं दो तारों को दिखाया जाता है और संदेश दिया जाता है कि आज से आप दोनों भी उन दो तारों की तरह जीवन पथ पर गमन करना. न कोई बड़ा ना कोई छोटा, परिवार में दोनों का समान महत्व है। जरा विचार कीजिए, आज वैज्ञानिकों ने दूरबीन की मदद से यह जाना कि आकाश में ऐसे भी दो तारे हैं जिनका गुरुत्व समान है और वह साथ-साथ रहते हैं, एक दूसरे को परिक्रमा नहीं करते। यह बात हमारे ऋषि मुनियों ने बिना दूरबीन की मदद से धरती पर रहते रहते ही जान ली थी और विवाह में नव दंपति को तारे दिखाने का रिवाज़ प्रारंभ हुआ।.

आधुनिक खगोल शास्त्री, शक्तिशाली दूरबीन की मदद से यह खोज कर पाए हैं कि हमारे सौरमंडल में सूर्य के परित ९ पिंड परिक्रमा कर रहे हैं। आकर में छोटा होने की वजह से प्लूटो को उपग्रह नहीं कहा जाता है। हमारे मंदिरों में, सदियों पूर्व, प्राचीन काल

से ही नवग्रह की पूजा होती आई है। स्पष्ट है कि हमारे पूर्वजों को नौ ग्रहों का ज्ञान था।

आज शालाओं में पढ़ाया जाता है कि विमान का आविष्कार ऑरविल और विल्बर राइट ने सन १९०३ में किया था। क्या आपने रामायण में सीता हरण वाला वाक्या सुना या पढ़ा है? जरा बताइए, रावण. माता सीता को जंगल में हर कर किस मार्ग से लंका की ओर ले गया था? जी हाँ, सही कहा आपने, वायु मार्ग से। वायु मार्ग से जाने के लिए रावण ने किस साधन का उपयोग किया था? जी हाँ, रावण ने पुष्पक विमान का उपयोग किया था। स्पष्ट है, रामायण काल अर्थात आज से लाखों वर्ष पूर्व, त्रेता युग में भारतीय उपमहाद्वीप में लोग विमान का उपयोग करते थे। भारतीय महर्षि भारद्वाज ने अपने ग्रंथ विमानिका शास्त्र में विमान के निर्माण, उड़ान और संचालन के बारे में विस्तार से बताया है।

नक्षत्र विज्ञान ही नहीं, गणित विषय में भी भारतीय ज्ञान काफी उन्नत था. आर्यभट्ट द्वारा लिखित पुस्तक आर्यभट्टीय में एक श्लोक है जो गणित और ज्यामिति से संबंधित है;

व्यासतास्त्रे वृत्तस्य पीठमानं सम्यग व्याख्यातुम।
अर्ध ज्या वृद्धिर्वृत्तस्य या शेषभागो व्यातीयतः।।

इसका अर्थ है कि वृत्त के पीठमान (व्यास) को सम्यक रूप से व्याख्यान करने के लिए वृत्त की अर्धज्या की वृद्धि के अनुसार शेष भाग को व्यतीत करने से वृत्त का क्षेत्रफल प्राप्त होता है।

कटापयादि संख्या के अनुसार यदि इस श्लोक के दो शब्दों को अंक प्रदान किया जाए तो यह श्लोक पाइ के मान को दशमलव के ३१ स्थान तक सटीक बताता है।

खगोल विज्ञान गणित के साथ ही धातु कर्म में भी भारतीय ज्ञान बेमिसाल था। उदाहरण स्वरूप दिल्ली में कुतुब मीनार के सामने खड़े लोह स्तंभ को लीजिए। इस स्तम्भ का निर्माण ४०२ ईस्वी में गुप्त वंश के शासक चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा करवाया गया था। यह स्तंभ आज भी बिना जंग लगे खड़ा है। इसी प्रकार का दूसरा जंग रोधी स्तंभ कर्नाटक राज्य के कोल्लूर में मुकाम्बिका मंदिर के सामने खड़ा है। इसका निर्माण कदंब वंश के शासनकाल में वहां के निवासियों ने दसवीं शताब्दी में किया था। वर्ष के सात - आठ माह में ७५० सेंटीमीटर होने वाली वर्षा के बावजूद भी यह स्तंभ बिना जंग लगे सुरक्षित है।

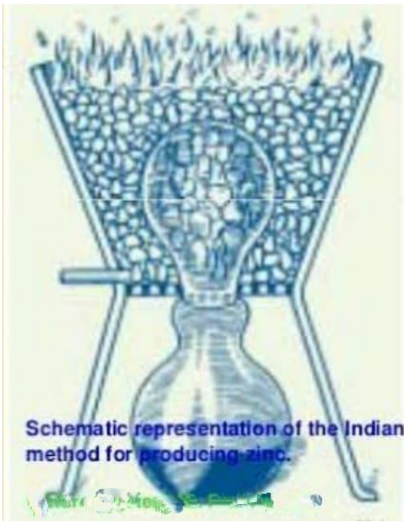

इतना ही नहीं आज से दो तीन हज़ार साल पहले अगर किसी को जस्ता (ज़िंक) चाहिए होता था तो उसे भारत ही आना पड़ता था क्योंकि जस्ते का निष्कर्षण केवल भारतीयों को ही आता था। जस्ते का गलनांक ९९७ डिग्री सेल्सियस है और १००० डिग्री सेल्सियस पर यह वाष्पीकृत हो जाता है, इस ३ डिग्री के अंतराल में जस्ते को पृथक करना किसी को नहीं आता था। भारतीयों ने भी वात्याभट्टी को उल्टा कर जस्ता एकत्र करने की विधि खोजी थी।

प्रायः यह देखा जाता है कि रामायण, महाभारत, और गीता पढ़कर, इससे संबंधित चलचित्र देखकर, या कथा सुनकर बच्चे अक्सर आशीर्वाद व श्राप के फलित होने, हनुमान जी के उड़ने की कथा उनके आकार को बड़ा या छोटा करने की क्षमता रखने, संजीवनी लाते समय हनुमान जी के पहाड़ उठाकर उड़ने, ऋषि नारद के एक जगह से अंतर्ध्यान होने और दूसरी जगह प्रकट होने, विश्वामित्र के श्राप से अहिल्या के पाषाण रूप में परिवर्तित होने तथा प्रभु श्री राम के स्पर्श से पुनः नारी रूप धारण करने, श्री कृष्ण के द्वारा एक अंगुली से पर्वत उठाने, संजय द्वारा धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध स्थल का सजीव विवरण प्रस्तुत करने जैसे प्रसंग की वास्तविकता पर प्रश्न करते हैं। सनातन धर्म में विद्यमान यह कुछ ऐसे बिंदु है जो बच्चे तो क्या बड़ों को भी सोचने पर मजबूर करते हैं।

क्योंकि आज किसी जीवित प्राणी में ऐसी क्षमता परिलक्षित नहीं होती इसलिए कुछ लोग उनकी वास्तविकता हेतु कुतर्क देते भी दिखाई पड़ते हैं। इतना तो तय है कि प्राचीन ऋषि मुनियों के पास आज के व्यक्ति की तुलना में ज्यादा ज्ञान व शक्ति थी। तब का विज्ञान आज के विज्ञान से कहीं ज्यादा उन्नत था। ग्रंथों में दी गई सारी बातों को कपोल कल्पित कहकर नकारा नहीं जा सकता क्योंकि आज का विज्ञान उन में से कुछ की पुष्टि करता नजर आता है।

आज दूरदर्शन पर घटनाओं का पूरे विश्व में सजीव प्रसारण, संजय द्वारा महाभारत युद्ध के सजीव विवरण को महाराज धृतराष्ट्र को सुनने की वास्तविकता के पक्ष में प्रमाण है। आज हवाई जहाज से एक देश से दूसरे देश की यात्रा करना, रावण द्वारा सीता हरण के बाद वायु मार्ग के पुष्पक विमान के प्रयोग की वास्तविकता की और इंगित करता है। आज वैज्ञानिकों द्वारा बड़ी-बड़ी दूरबीनों कि मदद से सौर मंडल के पिंडों को देखकर कंप्यूटर पर गणनाएं करके सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण की तिथि व समय बताना और उन्हीं ग्रहण के समय का भारतीय पंचांग में दिए गए समय से मेल खाना इंगित करता है कि हमारे ऋषि मुनियों की गणनाएं कितनी सटीक थी और आज पर्यंत सही साबित हो रही है।

हनुमान चालीसा में तुलसीदास जी ने सूर्य और पृथ्वी के बीच की जो दूरी बताई है 'जुग सहस्त्र योजन पर भानु' आज वैज्ञानिक गणनाएं भी सूर्य और पृथ्वी के बीच दूरी का परिमाण यही बता रही हैं।

ऋषि मुनियों को प्राप्त उन्नत ज्ञान व अविश्वसनीय क्षमताएं कैसे प्राप्त हुई थीं? प्राचीन समय में जो भी ज्ञान का सृजन हुआ वह ऋषि मुनियों द्वारा ही हुआ, ऋषि मुनियों से ही समाज केअन्य लोगों में प्रसारित हुआ। जरा विचार कीजिए, सारा सृजन ऋषियों के माध्यम से ही क्यों हुआ? समाज के अन्य घटकों ने यह सृजन, यह क्षमता हासिल क्यों नहीं की? इस प्रश्न का उत्तर हमें मिलता है जब हम ऋषि मुनियों की जीवन शैली पर विचार करते हैं, उनका जीवन रोज रोटी के लिए किए जाने वाले श्रम से मुक्त था। श्रम से मुक्त होने की वजह से वे सारा समय तप करते थे, ध्यान मग्न रहते थे। उन्होंने सारा ज्ञान, ध्यान के माध्यम से ही हासिल किया था। ध्यान का अभ्यास होने पर खोज करने के लिए किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती, ध्यान में व्यक्ति आकाश में विचरण कर सकता है, अणु के भीतर भी देख सकता है।

आज की पीढ़ी के पास ध्यान करने की क्षमता ही नहीं है। बच्चों में ध्यान का अभ्यास कराया जाना अति आवश्यक है। भावी पीढ़ी को ज्ञानवान बनाने के लिए आज आवश्यकता है कि शालाओं में अनिवार्य रूप से यम, नियम, आसन, ध्यान, और धारणा की शिक्षा दी जानी चाहिए।

अजय शर्मा डीएवी पब्लिक स्कूल, हुडको, भिलाई, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ से हैं।